समीक्षा

पुस्तक समीक्षा एवं शोध की श्रेष्ठ त्रैमासिक पत्रिका

जनवरी-मार्च, 2013

वर्ष : 45, अंक : 4

संपादक

सत्यकाम

प्रबंध संपादक

महेश भारद्वाज

प्रबंध कार्यालय

सामयिक प्रकाशन
3320-21 जटवाड़ा, नेताजी सुभाष मार्ग
दरियागंज, नई दिल्ली-110002
फोनः 011-23282733; टेलीफैक्स : 011-23270715
E-mail: samayikprakashan@gmail.com
samikshaquaterly@gmail.com

संपादकीय कार्यालय

संपादक **समीक्षा**
एच-2, यमुना, इग्नू, मैदानगढ़ी,
नई दिल्ली-110068
फोन : 011-29533534
E-mail: satyakamji@gmail.com

समीक्षा

जनवरी-मार्च, 2013

वर्ष : 45, अंक : 4

प्रकाशन तिथि : 15 मार्च, 2013

संस्थापक संपादक : गोपाल राय

सहायक संपादक : अमिताभ राय

सहायक प्रबंध कार्यालय : हेमचन्द्र पन्त

सहयोग राशि

मूल्य ₹ 30 *(बिना डाक खर्च के)*

डाक द्वारा भेजी जाने वाली पत्रिका

मूल्य ₹ 50

व्यक्तिगत ग्राहकों के लिए

वार्षिक ₹ 200 त्रैवार्षिक ₹ 600 आजीवन ₹ 2000

संस्थाओं के लिए

वार्षिक ₹ 300 त्रैवार्षिक ₹ 900 आजीवन ₹ 3000

निवेदन

- कृपया सारे भुगतान मनीआर्डर अथवा बैंक ड्राफ्ट द्वारा '**समीक्षा**' के नाम (देय दिल्ली-नई दिल्ली) से किए जाएं।
- मनीऑर्डर के कूपन पर प्रेषित धन राशि और प्रेषक का नाम-पता अवश्य लिखें।
- पत्रिका का कोई अंक न मिलने पर उसकी सूचना **प्रबंध कार्यालय** को शीघ्र दें।
- पत्रिका के मूल्य/बिल का भुगतान बैंक ड्राफ्ट द्वारा यथाशीघ्र करें।

'**समीक्षा**' [illegible]

- संपादक, सहायक संपादक अवैतनिक, अव्यावसायिक रूप से मात्र साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म में सहयोगी।
- समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय में विचारणीय।

- [illegible]

SAMIKSHA

A quaterly journal of Book Reviews & Research in Hindi

Published by SAMAYlK PRAKASHAN, 3320-21, Jatwara, N.S. Marg, Daryaganj, New Delhi-ll0002

E-mail: samikshaquaterly@gmail.com

समीक्षा

पुस्तक समीक्षा एवं शोध
*की **श्रेष्ठ** त्रैमासिक पत्रिका*

जनवरी-मार्च, 2013
वर्ष : 45, अंक 4

अनुक्रम

	संपादकीय	*सत्यकाम*	5
साक्षात्कार	विद्या का अनुशासन **मैं** पूरी तरह **पालन** नहीं कर **पाता** : **विश्वनाथ त्रिपाठी**	*वेंकटेश कुमार*	6
	केवल जीवनी नहीं, एक इतिहास भी है *(व्योमकेश दरवेश / विश्वनाथ त्रिपाठी)*	*सत्यकाम*	11
साक्षात्कार	**लमही सम्मान मेरे लिए एक** मील का पत्थर है : **मनीषा कुलश्रेष्ठ**	***ईशिता सिद्धार्थ***	17
	मानवीय जीवन एवं संबंधों की परत-दर-परत उधेड़ती कहानियां *(गंधर्व-गाथा / मनीषा कुलश्रेष्ठ)*	*स्वाति तिवारी*	20
	संतूर : मेरा जीवन संगीत ***(संतूर: मेरा** जीवन संगीत/ **शिवकुमार** शर्मा एवं **ईना** पुरी)*	*SU« भूषण जोशी*	22
	दो संस्मरणात्मक पुस्तकें *(क्या **कहूं**, क्या न **कहूं** / शीला इन्द्र* *आओ नैनीताल चलें / कृष्णा कुमारी)*	***वीरेन्द्र सक्सेना***	25
[illegible]	पहला संपादकीय *(पहला संपादकीय / विजयदत्त श्रीधर)*	***कुमुद** शर्मा*	28
उपन्यास	भूभल : कथ्य **और तथ्य** का हृदय विदारक **विश्लेषण** *(भूभल / मीनाक्षी स्वामी)*	*पुरुषोत्तम दुबे*	30
उपन्यास	**शुद्ध एवं संपूर्ण अनुवाद : शरत के** उपन्यासों **के संदर्भ** में ***(देवदास** / **शरत** चंद्र;* *श्रीकांत / **शरतचंद्र)***	*अरुण **होता***	32
उपन्यास	सामाजिक संघर्ष **की** गाथा *(हिरनी-बिरनी / **मृदुला** शुक्ला)*	*राजेश राव*	35
उपन्यास	परिमित से अपरिमित **की ओर** *(जयगाथा / मधुकर गंगाधर)*	***अरविन्द अवस्थी***	37

उपन्यास	जीवन की **जटिल स्थितियों** का विस्तार *(कथा **सनातन** / **रमेशचंद्र** शाह;* *पोटली / **द्रोणवीर कोहली;*** *स्वर्णमृग / गिरिराज किशोर)*	***महाबीर रवांल्टा***	38
	जिंदगी की आपाधापी की रचनात्मक अभिव्यक्ति *(एक **बड़ा सवाल** / **शीला इन्द्र**)*	*हरेकृष्ण तिवारी*	41
	दोहरे मानदंडों से जूझती धरती की परियां *(आओ मां! हम परी हो जाएं / रोहिणी अग्रवाल)*	*मधु संधु*	43
	जीवन की जटिलताओं में सादगी से **प्रवेश** ***(शुभारंभ** और **अन्य** कहानियां / ओमा शर्मा)*	*राकेश शुक्ल*	45
आलोचना	प्रेमचंद की विरासत **और गोदानः किसान** जीवन की त्रासद **गाथा** का पुनर्पाठ *(प्रेमचंद की **विरासत** और **गोदान** / **शिवकुमार** मिश्र)*	***पूनम** सिन्हा*	47
आलोचना	निराला **के गद्यकार रूप** की **परख** *(निराला का गद्य और **भारतीय समाज** / ममता तिवारी*	*अनिल राय*	50
	गहन मानवीय विमर्श का यत्न ***(खबरें** और **अन्य** कविताएं / गंगाप्रसाद विमल)*	*ज्योतिष जोशी*	52
	सामाजिक विसंगतियों से जूझती कविताएं ***(कुछ दूर** रेत पर चलकर / वरुण **कुमार** तिवारी* *अलाव जल **रहा** है / वसंत **कुमार** परिहार)*	*कृष्ण शलभ*	54
	बुद्ध का **मजाक बना, बुद्ध मुस्कुराये** *(बुद्ध मुस्कराये / यश मालवीय)*	*श्रीकांत सिंह*	56
व्याकरण/ **साक्षात्कार**	**समीक्षा** में सृजन *(सृजन और समीक्षा/ व्यासमणि **त्रिपाठी;*** *साधना **से** संवाद / प्रेमकुमार)*	*अरविन्द अवस्थी*	58
साहित्य सर्वेक्षण	2012 का साहित्य : **एक लेखा-जोखा**	*अमिताभ राय*	59

निराला के गद्यकार रूप की परख

○ अनिल राय

निराला का गद्य और भारतीय समाज,
ले. ममता तिवारी,
प्र. सामयिक बुक्स
दरियागंज, नई दिल्ली-110002,
प्र.सं. 2011, पृ.स. 368, ₹ 600.00

'निराला का गद्य और भारतीय समाज' ममता तिवारी द्वारा लिखी एक शोध-पुस्तक है। इस पुस्तक में लेखिका ने भारतीय समाज के संदर्भ में निराला के समूचे गद्य साहित्य का अध्ययन-विवेचन करने की एक कोशिश की है। वस्तुतः निराला के कवि रूप का अध्ययन विगत पैंसठ-सत्तर वर्षों से निरंतर होता आ रहा है। प्रशस्ति में गद्यकार निराला कुछ पीछे छूट गए और वे उस स्थान पर स्थापित नहीं हो सके, जिसके वे हकदार थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि एक कवि के रूप में निराला का जितना बड़ा कद था, गद्यकार के रूप में उससे छोटा नहीं था। इसके प्रमाण के रूप में उनके उपन्यासों, कहानियों निबंधों, समीक्षाओं एवं टिप्पणियों को जांच-परखकर आश्वस्त हुआ जा सकता है।

समीक्ष्य पुस्तक में कुल सात अध्याय हैं। पहला अध्याय भारतीय समाज के संगठन एवं स्वरूप पर केंद्रित है, जिसमें लेखिका ने सामाजिक व्यवस्था के इतिहास का व्यवस्थित परिचय दिया है। इसके अंतर्गत भारतीय समाज के प्राचीनतम धर्मों वर्ण-व्यवस्था, आश्रम-व्यवस्था, पुरुषार्थ चतुष्टय, जाति-व्यवस्था, सामाजिक-धार्मिक संस्कार आदि का क्रमशः परिचय देते हुए इसकी विकास-यात्रा को बीसवीं सदी तक लाया गया है।

'भारत में नवजागरण के विभिन्न रूप' समीक्ष्य पुस्तक का दूसरा अध्याय है। इसके अंतर्गत लेखिका द्वारा भारतीय नवजागरण के उदय एवं विकास का स्वरूप स्पष्ट करते हुए इसके विभिन्न रूपों को उद्घाटित किया गया है। बंगाल के नवजागरण को ही भारतीय नवजागरण के उदय के रूप में देखा गया है। इस अध्याय में लेखिका ने समूचे भारतीय नवजागरण के आलोक में देश की बदलती उस तस्वीर को रूपायित करने का प्रयास किया है, जिसने निराला सरीखे साहित्यकार के भीतर सर्जनात्मक विस्फोट की ऊर्जा भरी।

पुस्तक का तीसरा अध्याय 'हिंदी गद्य और नवजागरण' है। यहां लेखिका ने हिंदी गद्य की पूर्वपीठिका, हिंदी गद्य का जन्म, हिंदी-उर्दू विवाद, अंग्रेजी शिक्षा-नीति और इसी के समानांतर भारतीय जनचेतना के उभार का क्रमबद्ध विवरण प्रस्तुत किया है। 1857 के स्वतंत्रता-संग्राम से हिंदी क्षेत्र के नवजागरण की शुरुआत को दर्शाती हुई लेखिका ने इसे बुद्धिवादी माना है, जो मूलतः भारतीय समाज की बहुआयामी दरिद्रता को मारने के लिए चलाया गया एक महा अभियान सा है।

'निराला के सामाजिक सरोकार और उनका कृतित्व' समीक्ष्य पुस्तक का चौथा अध्याय है। अध्याय के आरंभ में निराला की जीवन-कथा का वर्णन करती हुई लेखिका ने पाठकों का ध्यान उन घटनाओं की ओर आकर्षित किया है, जिन्होंने सूर्यकुमार को सूर्यकांत और सूर्यकांत को 'निराला' बनाने में अहम भूमिका निभाई। सच्चाई तो यही है कि निराला का जीवन ही अपने आपमें एक गंभीर साहित्य है। यही कारण है कि उनके जीवन की मुकम्मल जांच-पडताल किए बगैर उनके साहित्य को पढ़ना-समझना एक बचकानी कोशिश जान

पड़ती है। निराला के वर्ण्य विषय कहीं से तलाश कर लाए हुए नहीं हैं, बल्कि उनके भोगे हुए यथार्थ से पैदा हुए हैं। आगे लेखिका ने निराला को प्राप्त उन सामाजिक संस्कारों की अलग से चर्चा की है, जिन्होंने निराला के व्यक्तित्व को ठोक-पीटकर गढ़ने और तराशने का काम किया। महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इन्हीं संस्कारों ने उन्हें एक संघर्षशील व्यक्ति, एक विद्रोही साहित्यकार एवं एक सशक्त व्यंग्यकार बनाया और विसंगतियों की झंझा से टकराने का अद्भुत साहस एवं शक्ति प्रदान की। अध्याय के अंत में निराला की रचनाओं का विकासात्मक परिचय दिया गया है।

समीक्ष्य पुस्तक के पांचवें अध्याय का शीर्षक है, 'निराला का गद्य साहित्य और भारतीय समाज'। इसके अंतर्गत लेखिका ने भारतीय समाज की पदचाप को निराला के गद्य साहित्य में जांचने-परखने की पूरी कवायद की है। इस प्रक्रिया में यह दर्शाया गया है कि निराला अपने समय और समाज में जिस यथार्थ को जी रहे थे, उनका भोगा हुआ वही सच उनकी गद्य-रचनाओं की धुरी बनकर उभरा है। चाहे 'बिल्लेसुर बकरिहा' के बिल्लेसुर हों या 'चतुरी चमार' में लेखक स्वयं हों, ये साहित्यिक चरित्र निराला के निजी व्यक्तित्व से क्षण-भर के लिए भी अलग नहीं दिखाई देते। ये चरित्र उनके व्यक्तिगत सुख-दुख और सोच-समझ से ऐसे गड्डमड्ड हो गए हैं कि इनमें किसी तरह की विभाजक रेखा खींचना आसान नहीं है। जिन सामाजिक विषमताओं से निराला का रोज सामना हो रहा था, उनके प्रति क्षोभ और विद्रोह उनकी रचनाओं का प्राणतत्त्व है। स्वयं लेखिका का कहना है कि नवजागरण की जमीन पर जहां राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती और विवेकानंद जैसे योद्धा नारी-मुक्ति की आवाज बुलंद कर रहे थे, वहीं निराला इसे देखने-समझने और आत्मसात करते हुए अपने कहानी-संग्रहों—'लिली', 'सखी' और 'सुकुल की बीवी' में नारी-जागरण का जयघोष करते सुनाई देते हैं। यहां लेखिका ने निराला की 'ज्योतिर्मयी' 'पद्मा और लिली', 'सखी', 'देवी' 'चतुरी चमार' आदि कथा-कृतियों का हवाला देते हुए यह बताना चाहा है कि एक कथाकार के रूप में निराला अपने समकालीन कथाकारों से कहीं उन्नीस नहीं हैं। यही स्थिति कमोबेश औपन्यासिक कृतियों की भी है। नवजागरण की प्रतिध्वनि 'अलका', 'अप्सरा', 'निरुपमा', 'प्रभावती' और 'काले कारनामे' आदि उपन्यासों में साफ सुनाई पड़ती है। लेखिका का मानना है कि 'कुल्लीभाट', 'बिल्लेसुर बकरिहा', 'देवी' और 'चतुरी चमार' जैसी श्रेष्ठ यथार्थवादी रचनाएं निराला की समाजवादी और [illegible]वादी विचारधाराओं की मनोभूमि की उपज हैं। लेखिका का कथन है कि "निराला की गद्यात्मक कृतियों में उनकी जागरूक एवं प्रबुद्ध सामाजिक चेतना वैवाहिक समस्या, जातीय-जागरण, वर्ग-संघर्ष, युग-विद्रोह, सुधार-संकल्प एवं लोक-संवेदना के रूप में व्यक्त हुई है।"

'निराला का समीक्षात्मक गद्य, अन्य गद्य रूप और भारतीय समाज' समीक्ष्य पुस्तक का छठा अध्याय है। यहां सबसे पहले सैद्धांतिक समीक्षा के स्वरूप और उसे मानदंड पर निराला को नापने-जोखने की पूरी कवायद की गई है।

सामाजिक समीक्षा की दृष्टि से निराला के चिंतन को लेखिका ने युगीन ऊर्जा से प्रेरित बताया है। निराला की खूबी यह है कि उन्होंने अपनी रचनाओं में समाज में व्याप्त अंधविश्वासों, मूर्तिपूजा, ढोंग, पाखंड, शूद्रों और स्त्रियों पर किए जाने वाले अत्याचारों तथा सामंतों-जमींदारों द्वारा किसानों पर किए जुल्मों पर प्रहार मात्र ही नहीं किया, बल्कि सकारात्मकता की दिशा में दो-चार कदम आगे बढ़ाते हुए नए भाव, नए विचार और एक नई सोच से समाज के लिए मार्ग भी प्रशस्त किया। समाज की जड़ें खोखली करतीं विषमताओं से आहत एवं क्षुब्ध निराला की लेखनी व्यंग्य की ओर भी गई। उन्होंने 'अलका', 'बिल्लेसुर बकरिहा' तथा 'भक्त और भगवान' जैसी रचनाओं में जहां-जहां भी व्यंग्य को आजमाया, सभी बड़े सशक्त और धारदार साबित हुए। अन्य गद्य-विधाओं के अंतर्गत लेखिका ने निराला के पत्र, उनके द्वारा लिखी गई पुस्तकों के प्राक्कथन-समर्पण आदि को समाहित किया है, जिन्हें छोड़कर शायद निराला के गद्य-साहित्य की संपूर्ण विवेचना अधूरी रह जाती। लेखिका ने उनकी रचनाओं के प्राक्कथन-समर्पण को उनके जीवन-दर्शन एवं साहित्य दर्शन के दुर्लभ अभिलेख के रूप में देखा है।

समीक्ष्य कृति के अंतिम अध्याय 'समशील गद्यकार और निराला: तुलनात्मक अध्ययन' में लेखिका ने निराला के गद्यकार रूप के साथ-साथ प्रेमचंद, प्रसाद, इलाचंद्र जोशी, जैनेन्द्र, भगवती चरण वर्मा, आचार्य शुक्ल, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि की गद्य रचनाओं का क्रमशः विवेचन-विश्लेषण किया है। इस प्रक्रिया में हिंदी गद्य-विधा-लोक में निराला को एक सम्मानित सोपान पर प्रतिष्ठित करने की कोशिश की गई है।

शुरू से आखिर तक पुस्तक की भाषा परिष्कृत, सहज एवं संप्रेषणीय है। अपने समग्र रूप में भारतीय समाज की धड़कन को अपने गद्य-साहित्य की आत्मा में बसाकर निराला ने यह साबित कर दिया था कि वे केवल संघर्ष और विद्रोह के ही नहीं, आशा, विश्वास और नव निर्माण के सर्जक भी हैं। लेखिका की मूल स्थापना यही है। कुल मिलाकर निराला की गद्यात्मक उपलब्धि की ओर हिंदी जगत का ध्यान आकर्षित करती ममता तिवारी की यह पुस्तक इस दिशा में एक महत्त्वपूर्ण एवं सार्थक कदम है।

———

75, शुभम अपार्टमेंट, आई.पी. एक्सटेंशन,
पटपड़गंज, दिल्ली-110092